

कहानी

पेशावर एक्सप्रेस

कृशन चंदर

जब मैं पिशावर से चली तो मैं ने छका छक इतमीनान का सांस लिया। मेरे डबों में ज़िआदातर हिंदू लोग बैठे हुए थे। ये लोग पिशावर से होती मरदान से, कोहाट से, चारसदा से, खैबर से, लंडी कोतल से, बंनों नौशहिरा से, मानसहरा से आए थे और पाकिस्तान में जान व माल को महिफूज़ ना पा कर हिंदुस्तान का रुख कर रहे थे, स्टेशन पर ज़बरदस्त पहिरा था और फ़ौज वाले बड़ी चौकसी से काम कर रहे थे। उन लोगों को जो पाकिस्तान में पनाहगुज़ीन और हिंदुस्तान में शरनारथी कहिलाते थे उस वक़्त तक चैन का सांस ना आइआ जब तक मैं ने पंजाब की रोमानखेज़ सरज़मीन की तरफ़ कदम ना बड़्हाए, ये लोग शकलो सूरत से बिलकुल पठाण मलूम होते थे, गोरे चिटे मज़बूत हाथ पाउं, सर पर कुलाह और लुंगी, और जिसम पर कमीज़ और शलवार, ये लोग पशतो में बात करते थे और कभी कभी निहाइत कुरखत किसम की पंजाबी में बात चीत करते थे। उन की हिफाज़त के लिए हर डबे में दो सिपाही बंदूकें ले कर खड़े थे। वजीह बलोची सिपाही आपणी पगड़ियों के अकब मोर के छतर की तर्ही खूबसूरत तुरे लगाए हुए हाथ में जदीद राइफलें लीए हुए उन पठानों और उन के बीवी बच्चों की तरफ़ मुसकरा मुसकरा कर देख रहे थे जो इक तारीखी खौफ और शर के ज़ेर-ए-असर उस सर ज़मीन से भागे जा रहे थे जहां वोह हज़ारों साल से रहिते चले आए थे जिस की संगलाख सर ज़मीन से उन्होंने ने तवानाई हासल की थी। जिस के बरफ़ाब चशमों से उन्होंने ने पाणी पिआ था। आज ये वतन यक लखत बेगाना हो गिआ था और उस ने आपणे मिहरबान सीने के कवाड़ों पर बंद कर दीए थे और वोह इक नए देस के तपते हुए मैदानों का तसवर दिल में लीए बा दिल नाखवासता वहां से रुखसत हो रहे थे। इस अमरा की मुसरत ज़रूर थी कि इन की जानें बच गई थीं। उन का बहुत सा मालो मताअ और उन की बहूओं, बेटीओं, माऊं और बीवीओं की आबरू महिफूज़ थी लेकिन उन का दिल रो रहा था और आंखें सरहद के पथरीले सीने पर यूं गड़ी होई थीं गोइआ इसे चीर कर अंदर घुस जाणा चाहती हैं और उस के शफ़कत भरे मामता के फ़वारे से पूछणा चाहती हैं, 'बोल मां आज किस जुरम की पादाश में तूने आपणे बेटों को घर से निकाल दिआ है। आपणी बहूओं को इस खूबसूरत आंगण से महिरूम कर दिआ है जहां वोह कल्ह तक सुहाग की राणीआं बणी बैठी थीं। आपणी अलबेली कंवारियों को जो अंगूर की बेल की तर्ही तेरी छाती से लिपट रही थीं झंजोड़ कर अलग कर दिआ है। किस लीए आज ये देस बदेस हो गिआ है। मैं चलती जा रही थी और डबों में बैठी होई मखलूक आपणे वतन की सत्हा मरतफ़ा उस के बुलंद व बाला चटानों, इस के मरगज़ारों, उस की शादाब वादीओं, कुंजों और बागों की तरफ़ यूं देख रही थी, जैसे हर जाणे पहिचाणे मंज़र को आपणे सीने में छुपा कर ले जाणा चाहती हो जैसे निगाह हर लखता रुक जाए, और मुझे ऐसा मलूम हुआ कि इस अज़ीम रंजो आलम के भार से मेरे कदम भारी होए जा रहे हैं। और रेल की पटरी मुझे जवाब दीए जा रही है। हसन अबदाल तक लोग यूं ही महिजों अफ़सुरदा यास व नकबत की तसवीर बणे रहे। हसन अबदाल के स्टेशन पर बहुत से सिख आए हुए

थे। पंजा साहिब से लंबी लंबी करपानें लीए चिहरों पर हवाईआं उड़ी होई बाल बचे सहिमे सहिमे से, ऐसा मलूम होता था कि आपणी ही तलवार के घाउ से ये लोग खुद मर जाएंगे। डबों में बैठ कर उन लोगों ने इतमीनान का सांस लिया और फिर दूसरे सरहद के हिंदू और सिख पठानों से गुफ्तगू शुरू हो गई किसी का घर बार जळ गिआ था कोई सिरफ़ इक कमीज़ और शलवार में भागा था किसी के पाउं में जुती ना थी और कोई इतना हुशियार था कि आपणे घर की टूटी चारपाई तक उठा लाइआ था जिन लोगों का वाकई बहुत नुकसान हुआ था वोह लोग गुंमसुंम बैठे होए थे। खामोश 'चुप चाप और जिस के पास कभी कुछ ना हुआ था वोह आपणी लाखों की जाइदाद खोने का गम कर रिहा था और दूसरों को आपणी फ़रज़ी इमारत के किसे सुणा सुणा कर मरऊब कर रिहा था और मुसलमानों को गालीआं दे रिहा था। बलोची सिपाही इक पुर वकार अंदाज़ में दरवाजों पर राइफलें थामें खड़े थे और कभी कभी इक दूसरे की तरफ़ कनखीओं से देख कर मुसकरा उठते। तकशला के सटेशन पर मुझे बहुत अरसे तक खड़हा रहिणा पड़ा, ना जाणे किस का इंतज़ार था, शाइद आसपास के गाउं से हिंदू पनाहगज़ीं आ रहे थे, जब गारड ने सटेशन मासटर से बार बार पूछा तो उस ने किहा ये गाड़ी आगे ना जा सकेगी। इक घंटा और गुज़र गिआ। अब लोगों ने अपना सामान खोरदोनोश खोळा और खाने लगे सहिमे सहिमे बचे कहिकहे लगाने लगे और मासूम कंवारीआं दरीचों से बाहर झांकने लगीं और बड़े बुड़े हुके गुड़गड़ाने लगे। थोड़ी देर के बाद दूर से शोर सुणाई दया और ढोलों के पिटणे की आवाजें सुणाई देणे लगीं ।

हिंदू पनाह गज़ीनों का जथा आ रिहा था शाइद लोगों ने सिर निकाल कर इधर इधर देखा। जथा दूर से आ रिहा था और नाअरे लगा रिहा था। वकत गुज़रता था जथा करीब आता गिआ, ढोलों की आवाज़ तेज़ होती गई। जिथे के करीब आते ही गोलीओं की आवाज़ कानों में आई और लोगों ने आपणे सिर खिड़कीओं से पिछे हटा लीए। ये हिंदूओं का जथा था जो आसपास के गाउं से आ रिहा था, गाउं के मुसलमान लोग इसे आपणी हिफ़ाज़त में ला रहे थे। चुनांचि हर इक मुसलमान ने इक काफ़र की लाश आपणे कंधे पर उठा रखी थी जिस ने जान बचा कर गाउं से भागने की कोशिश की थी। दो सौ लाशें थीं। मजमा ने ये लाशें निहाइत इतमीनान से सटेशन पहुंच कर बलोची दसते के सपुरद की और किहा कि वोह उन महाजरीन को निहाइत हिफ़ाज़त से हिंदुस्तान की सरहद पर ले जाए, चुनांचि बलोची सिपाहीओं ने निहाइत खंदा पेशानी से इस बात का ज़िंमा लिया और हर डबे में पंदरा बीस लाशें रखदी गई। इस के बाद मजमा ने हवा में फ़ाइर कीआ और गाड़ी चलाणे के लीए सटेशन मासटर को हुकम दिया मैं चलणे लगी थी कि फिर मुझे रोक दीआ गिआ और मजमा के सरगने ने हिंदू पनाह गज़ीनों से किहा कि दो सौ आदमीओं के चले जाणे से उन के गाउं वीरान हो जाएंगे और उन की तजारत तबाह हो जाएगी इस लीए वोह गाड़ी मैं से दो सौ आदमी उतार कर आपणे गाउं ले जाएंगे। चाहे कुछ भी हो। वोह आपणे मुलक को यूं बरबाद होता हुआ नहीं देख सकते। इस पर बलोची सिपाहीओं ने इन के फ़हिम व ज़का और उन की फ़िरासत तबा की दाद दी। और उन की वतन दोसती को सराहा। चुनांचि इस पर बलोची सिपाहीओं ने हर डबे से कुछ आदमी निकाल कर मजमा के हवाले कीए। पूरे दो सौ आदमी निकाले गए। इक कम ना इक ज़िआदा। "लाईन लगाउ काफ़रो," सरगने ने किहा। सरगना आपणे इलाका का सभ से बड़ा जागीरदार था। और आपणे लहू की रवानी में मुकदस जहाद की गूंज सुण रिहा था। काफ़र पथर के बुत बणे खड़े थे। मजमा के लोगों ने इन्हें उठा उठा कर लाईन में खड़हा किआ। दो सौ आदमी, दो सौ ज़िंदा लाशें, चिहरे सते होए। आंखें फ़ज़ा में तीरों की बारिश सी महिसूस करती होई। पहिल बलोची सिपाहीओं ने की। पंदरा आदमी फ़ाइर से गिर गए। ये तकशला का सटेशन था। बीस और आदमी गिर गए। यहां एशीआ की सभ से बड़ी यूनीवरसिटी थी और लाखों तालिब-ए-इलम इस तहिज़ीब ओ तमदन के गहु अरे से कसब फ़ैज़ करते थे। पचास और मारे गए। तकशला के अजाइब घर में इतने खूबसूरत बुत थे इतने हुसन संग

तराशी के नादर नमूने, कदीम तहिजीब के झलमाते होए चिराग। पचास और मारे गए। पस-ए-मंजर में सिर कप का महिल था और खेलों का असगी थेटर और मीलों तक फैले होए इक वसीअ शहिर के खंडर, तकशला की गुजशता अजमत के पुर शिकवा मज़हर। तीस और मारे गए। यहां कनिशक ने हकूमत की थी और लोगों को अमन व आशती और हुसन व दौलत से मालामाल कीआ था। पचीस और मारे गए। यहां बुध का नगमा उरफ़ां गूंजा हह यहां भिकशूओं ने अमन व सुल्हा व आशती का दरस हयात दीआ था। अब आखरी गरोह की उजल आ गई थी। यहां पहिली बार हिंदुसतान की सरहद पर इसलाम का प्रचम लहिराइआ था। मुसावात और अखवत और इनसानीअत का प्रचम। सभ मर गए। अल्हा अकबर। फ़रश खून से लाळ था।

जब मैं पलेटफ़ारम से गुज़री तो मेरे पाउं रेल की पटरी से फिसले जाते थे जैसे मैं अभी गिर जाऊंगी और गिर कर बाकी माणदा मसाफ़िरो को भी खतम कर डालूंगी। हर डबे में मौत आ गई थी और लाशें दरमिआन में रखदी गई थीं और ज़िंदा लाशों का हजूम चारों तरफ़ था और बलोची सिपाही मुसकरा रहे थे कहीं कोई बचा रोणे लगा किसी बुद्धी मां ने सिसकी ली। किसी के लुटे होए सुहाग ने आह की। और चीखती चलाती रावलपिंडी के फ़ारम पर आ खड़ी होई। यहां से कोई पनाहगुज़ीन गाड़ी में सवार ना हुआ। इक डबे में चंद मुसलमान नौजवान पंदरा बीस बुरका पोश औरतों को लै कर सवार होए। हर नौजवान राइफ़ल से मसला था। इक डबे में बहुत सा सामान जंग लादा गिआ मशीन गंनें, और कारतूस, पिसतौल और राइफ़लें। जिहलम और गुजर खां के दरमिआनी इलाके में मुझे संगल खेंच कर खड़हा कर दिआ गिआ। मैं रुक गई। मसला नौजवान गाड़ी से उतरने लगे। बुरका पोश खवातीन ने शोर मचाणा शुरू किआ। हम हिंदू हैं। हम सिख हैं। हमें ज़बरदसती लै जा रहे हैं। उनहों ने बुरके फाड़ डाले और चिलाणा शुरू किआ। नौजवान मुसलमान हंसते होए उनहें घसीट कर गाड़ी से निकाल लाए। हां ये हिंदू औरतें हैं, हम इनहें रावलपिंडी से उन के आराम दा घरों, इन के खुशहाल घराणों, इन के इज़तदार मां बाप से छीन कर लाए हैं। अब ये हमारी हैं हम उन के साथ जो चाहे सलोक करेंगे। अगर किसी में हिंमत है तो इनहें हम से छीन कर लै जाए। सरहद के दो नौजवान हिंदू पठाण छलांग मार कर गाड़ी से उतर गए, बलोची सिपाहीओं ने निहाइत इतमीनान से फ़ाइर कर के इनहें खतम कर दिआ। पंदरा बीस नौजवान और निकले, इनहें मसला मुसलमानों के गरोह ने मिंटों में खतम कर दिआ। दरअसल गोशत की दीवार लोहे की गोली का मुकाबला नहीं कर सकती। नौजवान हिंदू औरतों को घसीट कर जंगल में लै गए मैं और मूंह छुपा कर वहां से भागी। काळा, खौफ़नाक सिआह धूआं मेरे मूंह से निकल रिहा था। जैसे काइनात पर खबासत की सिआही छा गई थी और सांस मेरे सीने में यूं अलझने लगी जैसे ये आहनी छाती अभी फुट जाएगी और अंदर भिड़ कते होए लाळ लाळ शोअले इस जंगल को खाक सिआह कर डालेंगे जो इस वकत मेरे आगे पीछे फैला हुआ था और जिस ने उन पंदरा औरतों को चशम ज़दन में निगल लिआ था। लाला मूसा के करीब लाशों से इतनी मकरूह सड़ांद निकलने लगी कि बलोची सिपाही इनहें बाहर फेंकने पर मजबूर हो गए। वोह हाथ के इशारे से इक आदमी को बुलाते और उस से कहिते, उस की लाश को उठा कर यहां लाओ, दरवाज़े पर। और जब वोह आदमी इक लाश उठा कर दरवाज़े पर लाता तो वोह उसे गाड़ी से बाहर धका दे दिते। थोड़ी देर में सभ लाशें इक इक हमराही के साथ बाहर फेंक दी गई और डबों में आदमी कम हो जाणे से टांगें फैलाणे की जगहा भी हो गई। फिर लाला मूसा गुज़र गिआ। और वज़ीराबाद आगिआ। वज़ीराबाद का मशहूर जंकशन, वज़ीराबाद का मशहूर शहिर, जहां हिंदुसतान भर के लीए छुरीआं और चाकू तिआर होते हैं। वज़ीराबाद जहां हिंदू और मुसलमान सदीओं से बैसाखी का मेला बड़ी धूमधाम से मनाते हैं और उस की खुशीओं में इकठे हिसा लीते हैं वज़ीराबाद का सटेशन लाशों से पटा हुआ था। शाइद ये लोग बैसाखी का मेला देखणे आए थे। लाशों का मेला शहिर में धूआं उठ रिहा था और सटेशन के करीब अंगरेज़ी बैंड की सदा सुणाई

दे रही थी और हजूम की पुर शोर ताळियों और कहकहों की आवाजें भी सुनाई दे रही थी और हजूम की पुर शोर ताळियों और कहकहों की आवाजें भी सुनाई दे रही थीं। चंद मिंटों में हजूम सटेशन पर आ गया। आगे आगे दिहाती नाचते गाते आ रहे थे और उन के पिछे नंगी औरतों का हजूम, मादर ज़ाद नंगी औरतें, बुड़ी, नौजवान, बचीआं, दादीआं और पोतीआं, माएं और बहिनें और बेटाआं, कंवारीआं और हामला औरतें, नाचते गाते हुए मरदों के नरगे में थीं। औरतें हिंदू और सिख थीं और मरद मुसलमान थे और दोनों ने मिल कर अजीब बैसाखी मनाई थी, औरतों के बाल खुले हुए थे। उन के जिसमों पर ज़खमों के निशान थे और वोह इस तर्ह सिधी तन कर चल रही थीं जैसे हज़ारों कपड़ों में उन के जिसम छुपे होण, जैसे उन की रूहों पर सकून आमेज़ मौत के दबीज़ साए छा गए होण। उन की निगाहों का जलाल दरद पिदी को भी शरमाता था और हॉट दांतों के अंदर यूं भींचे हुए थे गोड़आ किसी महेब लावे का मूंह बंद कीए होए हैं। शाइद अभी ये लावा फुट पड़ेगा और आपणी आतिश फ़शानी से दुनीआ को जहंनम राज़ बना देगा। मजमा से आवाज़ें आई। पाकिसतान ज़िंदा बाद इसलाम ज़िंदाबाद। काइदे आज़म मुहंमद अली जिनाह ज़िंदाबाद। नाचते थिरकते होए कदम परे हट गए और अब ये अजीबो ग़रीब हजूम डबों के ऐन साम्हणे था। डबों में बैठी होई औरतों ने घूँघट चाइह लीए और डबे की खिड़कीआं यके बाद बंद दीगरे होणे लगी। बलोची सिपाहीओं ने किहा। खिड़कीआं मत बंद करो, हवा रुकती है, खिड़कीआं बंद होती गई। बलोची सिपाहीओं ने बंदूकें ताण लीं। ठाएं, ठाएं फिर भी खिड़कीआं बंद होती गई और फिर डबे में इक खिड़की भी ना खुली रही। हां कुछ पनाहगज़ीन ज़रूर मर गए। नंगी औरतें पनाह गज़ीनों के साथ बिठा दी गई। और मैं इसलाम ज़िंदाबाद और काइदे आज़म मुहंमद अली जिनाह ज़िंदाबाद के नाअरों के दरमिआन रुखसत होई। गाड़ी में बैठा हुआ इक बचा लुइहकता लुइहकता इक बुड़ी दादी के पास चला गया और उस से पूछणे लगा मां तुम नहा के आई हो? दादी ने आपणे आंसूओं को रोकते होए किहा। हां नन्हे, आज मुझे मेरे वतन के बेटों ने भाईओं ने नहिलाइआ है। तुमहारे कपड़े कहां हैं अंमां? उन पर मेरे सुहाग के खून के छींटे थे बेटा। वोह लोग इनहें धोणे के लीए लैगे हैं। दो नंगी लड़कीओं ने गाड़ी से छलांग लगा दी और मैं चीखती चलाती आगे भागी। और लाहौर पहुंच कर दम लिया। मुझे इक नंबर पलेटफ़ारम पर खड़ा कीआ गया। नंबर 2 पलेटफ़ारम पर दूसरी गाड़ी खड़ी थी। ये अंम्रितसर से आई थी और इस में मुसलमान पनाह गज़ी बंद थे। थोड़ी देर के बाद मुसलिम खिदमतगार मेरे डबों की तलाशी लैणे लगे। और ज़ेवर और नकदी और दूसरा कीमती सामान महाजरीन से लै लिया गया। इस के बाद चार सौ आदमी डबों से निकाल कर सटेशन पर खड़े कीए थे। ये मजहब के बकरे थे किउंकि अभी अभी नंबर 2 पलेटफ़ारम पर जो मुसलिम महाजरीन की गाड़ी आकर रुकी थी उस में चार सौ मुसलमान मुसाफ़र कम थे और पचास मुसलिम औरतें अगवा कर ली गई थीं इस लीए यहां पर भी पचास औरतें चुण चुण कर निकाल ली गई और चार सौ हिंदुस्तान मसाफ़िरो को तहि तेग कीआ गया ता कि हिंदुस्तान और पाकिसतान में आबादी का तवाज़न बरकरार रहे। मुसलिम खिदमत गारों ने इक दाइरा बना रखा था और छुरे हाथ में थे और दाइरे में बारी बारी इक महाजरान के छुरे की ज़द में आता था और बड़ी चाबक दसती और मशाकी से हलाक कर दिया जाता था। चंद मिंटों में चार सौ आदमी खतम कर दीए गए और फिर मैं आगे चली। अब मुझे आपणे जिसम के ज़रे ज़रे से घिण आने लगी। इस कदर पलीद और मताफ़न महिसूस कर रही थी। जैसे मुझे शैतान ने सीधा जहंनम से धका दे कर पंजाब में भेज दिया हो। अटारी पहुंच कर फ़ज़ा बदल सी गई। मुग़लपुरा ही से बलोची सिपाही बदले गए थे और उन की जगहा डोगरों और सिख सिपाहीओं ने लै ली थी। लेकिन अटारी पहुंच कर तो मुसलमानों की इतनी लाशें हिंदू महाजर ने देखीं कि उन के दिल फ़ुरत मुसरत से बाग़ बाग़ हो गए। आज़ाद हिंदुस्तान की सरहद आ गई थी वरना इतना हुसीन मंज़र किस तर्ह देखणे को मिलता और जब मैं अंम्रितसर सटेशन पर पहुंची तो सिखों के

नाअरों ने ज़मीन आसमान को गूँजा दिया। यहां भी मुसलमानों की लाशों के ढेर के ढेर थे और हिंदू जाट और सिख और डोगरे हर डबे में झांक कर पूछते थे, कोई शिकार है, मतलब ये कि कोई मुसलमान है।

इक डबे में चार हिंदू व ब्राह्मण सवार होए। सिर घटा हुआ, लंबी चोटी, राम नाम की धोती बांधे, हर दवारका सफ़र कर रहे थे। यहां हर डबे में आठ दस सिख और जाट भी बैठ गए, ये लोग राइफ़लों और बलमों से मसला थे और मशरकी पंजाब में शिकार की तलाश में जा रहे थे। उन में से इक के दिल में कुछ शुब्हा सा हुआ। उस ने इक ब्राह्मण से पूछा। ब्राह्मण देवता किधर जा रहे हो? हर दवार। तीरथ करने। हर दवार जा रहे हो कि पाकिस्तान जा रहे हो। मीआं अल्हा अल्हा करो। दूसरे ब्राह्मण के मूंह से निकला। जाट हिंसा, तो आओ अल्हा अल्हा करीं। औनथा सिहां, शिकार मिल गिआ भई आओ रहीदा अल्हा बैली करए। इतना कहि कर जाट ने बलम नकली ब्राह्मण के सीने में मारा। दूसरे ब्राह्मण भागने लगे। जाटों ने इनहें पकड़ लिया। इसे नहीं ब्राह्मण देवता, ज़रा डाकटरी माअना कराते जाओ। हर दवार जाणे से पहिले डाकटरी माअना बहुत ज़रूरी होता है। डाकटरी मुआइने से मुराद ये थी कि वोह लोग खतना दिखते थे और जिस के खतना हुआ होता उसे वहीं मार डालते। चारों मुसलमान जो ब्राह्मण का रूप बदल कर आपणी जान बचाने के लीए भाग रहे थे। वहीं मार डाले गए और मैं आगे चली। रासते में इक जगहा जंगल में मुझे खड़हा कर दिया गिआ और महाजरीन और सिपाही और जाट और सिख सभ निकल कर जंगल की तरफ़ भागने लगे। मैं ने सोचा शाइद मुसलमानों की बहुत बड़ी फ़ौज उन पर हमला करने के लीए आ रही है। इतने में किआ देखती हूं कि जंगल में बहुत सारे मुसलमान मज़ारा आपणे बीबी बचों को लीए छपे बैठे हैं। सिरी असत अकाल और हिंदू धरम की जै के नाअरों की गूँज से जंगल कांप उठा, और वोह लोग नर गे में लीए गए। आधे घंटे में सभ सफ़ाईआ हो गिआ। बुढे, जवान, औरतें और बचे सभ मार डाले गए। इक जाट के नेजे पर इक नन्हें बचे की लाश थी और वोह उस से हवा में घुमा घुमा कर कहि रिहा था। आई बैसाखी। आई बैसाखी जटा लाए हैं है।

जलंधर से इधर पठानों का इक गाउं था। यहां पर गाड़ी रोक कर लोग गाउं में घुस गए। सिपाही और महाजरीन और जाट पठानों ने मुकाबिल किआ। लेकिन आखिर में मारे गए, बचे और मरद हलाक हो गए तो औरतों की बारी आई और वहीं इसी खुले मैदान में जहां गेहूं के खलिआण लगाए जाते थे और सरसों के फूल मुसकराते थे और गुफ्त मआब बीबीआं आपणे ख़ावंदों की निगाह शौक की ताब ना लाकर कमज़ोर शाखों की तर्हा झुकी झुकी जाती थीं। इसी वसीअ मैदान में जहां पंजाब के दल ने हीर रांझे और सोहणी महीवाल की लाफ़ानी उलफ़त के तराने गाए थे। इनहें शीशम, सरस और पीपल के द्रखतों तळे वकती चकले आबाद होए। पचास औरतें और पांच सौ ख़ावंद, पचास भेड़ें और पांच सौ कसाब, पचास सोहणीआं और पांच महीवाल, शाइद अब चनाब में कभी तुगिआनी ना आएगी। शाइद अब कोई वारिस शाह की हीर ना गाएगा। शाइद अब मिरज़ा साहिबान की दासतान उलफ़त व अफ़त उन मैदानों में कभी ना गूँजेगी। लाखों बार लाहनत हो इन राहनमाओं पर और उन की सात पुशतों पर, जिनहों ने इस ख़ूबसूरत पंजाब, इस अलबेले पिआरे, सुनहिरे पंजाब के टुकड़े टुकड़े कर दीए थे और उस की पाकीज़ा रूह को गहिणा दीआ था और उस के मज़बूत जिसम में नफ़रत की पीप भरदी थी, आज पंजाब मर गिआ था, उस के नग़मे गुंगे हो गए थे, उस के गीत मुरदा, उस की ज़बान मुरदा, उस का बेबाक निडर भोळा भाला दिल मुरदा, और ना महिसूस करते होए और आंख और कान ना रखते होए भी मैं ने पंजाब की मौत देखी और ख़ौफ़ से और हैरत से मेरे कदम इस पटरी पर रुक गए। पठाण मरदों और औरतों की लाशें उठाए जाट और सिख और डोगरे और सरहदी हिंदू वापस आए और मैं आगे चली। आगे इक नहिर आती थी ज़रा ज़रा वक़फ़े के बाद मैं रुकदी जाती, जिउं ही कोई डबा नहिर के पुळ पर से गुज़रता, लाशों को ऐन नीचे नहिर के पाणी में गिरा दिया जाता। इस तर्हा

जब हर डबे के रुकने के बाद सभ लाशें पाणी में गिरा दी गईं तो लोगों ने देसी शराब की बोतलें खोल्हीं और मैं खून और शराब और नफरत की भाप उगलती हुई आगे बढ़ी। लुथिआणा पहुंच कर लुटेरे गाड़ी से उतर गए और शहर में जा कर उन्होंने मुसलमानों के महलों का पता ढूंढ निकाला। और वहां हमला कीआ और लूट मार की और माल गनीमत आपणे कंधों पर लादे होए तिन चार घंटों के बाद सटेशन पर वापस आए जब तक लूट मार ना हो चुकी। जब तक दस बीस मुसलमानों का खून ना हो चुकता। जब तक सभ महाजरीन आपणी नफरत को आलूदा ना कर लीते मेरा आगे बढ़ना दुशवार किआ नामुमकिन था, मेरी रूह मैं इतने घाउ थे और मेरे जिसम का ज़रा ज़रा गंदे नापाक खूनीओं के कहकहों से इस तर्हा रच गिआ था कि मुझे गुसल की शदीद ज़रूरत महिसूस होई। लेकिन मुझे मलूम था कि इस सफ़र में कोई मुझे नहाने ना देगा। अंबाला सटेशन पर रात के वक़्त मेरे इक फ़सट कलास के डबे में इक मुसलमान डिपटी कमिशनर और उस के बीवी बच्चे सवार होए। इस डिबे में इक सरदार साहिब और उन की बीवी भी थे, फ़ौजियों के पहिरे में मुसलमान डिपटी कमिशनर को सवार कर दिआ गिआ और फ़ौजियों को उन की जान व माल की सख़्त ताकीद कर दी गई। रात के दो बजे में अंबाले से चली और दस मील आगे जा कर रोक दी गई। फ़रसट कलास का डबा अंदर से बंद था। इस लीए खिड़की के शीशे तोड़ कर लोग अंदर घुस गए और डिपटी कमिशनर और उस की बीवी और उस के छोटे छोटे बच्चों को कतल कीआ गिआ, डिपटी कमिशनर की इक नौजवान लड़की थी और बड़ी खूबसूरत, वोह किसी कालज में पड़हती थी। दो इक नौजवानों ने सोचा इसे बचा लीआ जाए। ये हुसन, ये रोनाई, ये ताज़गी ये जवानी किसी के काम आ सकती है। इतना सोच कर उन्होंने जलदी से लड़की और ज़ेवरात के बकस को संभाला और गाड़ी से उतर कर जंगल में चले गए। लड़की के हाथ में इक किताब थी। यहां ये कानफ़रंस शुरू होई कि लड़की को छोड़ दीआ जाए या मार दीआ जाए। लड़की ने किहा। मुझे मारते किउं हो? मुझे हिंदू कर लौ। मैं तुम्हारे मज़हब में दाखल हो जाती हूं। तुम में से कोई इक मुझ से बिआह कर ले। मेरी जान लैणे से किआ फ़ाइदा! ठीक तो कहिती है, इक बोळा। मेरे खिआल में, दूसरे ने कत्हा कलाम करते होए और लड़की के पेट में छुरा घोंपते होए किहा। मेरे खिआल में उसे खतम कर देणा ही बिहतर है। चलो गाड़ी में वापस चलो। किआ कानफ़रंस लगा रखी है तुम ने। लड़की जंगल में घास के फ़रश पर तड़प तड़प कर मर गई। उस की किताब उस के खून से तरबतर हो गई। किताब का उनवान था इशतराकीअत अमल और फ़लसफ़ा इज़ जान सटरेटजी। वोह ज़हीन लड़की होगी। उसके दिल में आपणे मुलको कौम की खिदमत के इरादे होणगे। उस की रूह में किसी से मुहबत करने, किसी को चाहने, किसी के गले लग जाणे, किसी बच्चे को दुध पिलाने का जज़बा होगा। वोह लड़की थी, वोह मां थी, वोह बीवी थी, वोह महिबूबा थी। वोह काइनात की तखलीक का मुकदस राज़ थी और अब उस की लाश जंगल में पड़ी थी और गिदड़, गिध और कऊए उस की लाश को नोच नोच कर खाएंगे।

इशतराकीअत, फ़लसफ़ा और अमल वहिशी दरिंदे इन्हें नोच नोच कर खा रहे थे और कोई नहीं बोलता और कोई आगे नहीं बढ़हता और कोई अवाम में से इनकलाब का दरवाज़ा नहीं खोलता और मैं रात की तारीकी आग और शरारों को छुपाके आगे बढ़ा रही हूं और मेरे डबों में लोग शराब पी रहे हैं और महातमा गांधी के जैकारे बुला रहे हैं। इक अरसे के बाद मैं बंबई वापस आई हूं, यहां मुझे नहिला धुला कर शैड में रख दिआ गिआ है। मेरे डबों में अब शराब के भपारे नहीं हैं, खून के छींटे नहीं हैं, वहिशी खूनी कहिकहे नहीं हैं मगर रात की तनहाई में जैसे भूत जाग उठते हैं मुरदा रूहें बेदार हो जाती हैं और ज़खमीओं की चीखें और औरतों के बीन और बच्चों की पुकार, हर तरफ़ फिज़ा में गूंजने लगती है और मैं चाहती हूं कि अब मुझे कभी कोई इस सफ़र पर ना ले जाए। मैं इस शैड से बाहर नहीं निकलणा चाहती हूं कि अब मुझे कभी कोई इस सफ़र पर ना ले जाए। मैं इस शैड से बाहर नहीं निकलणा चाहती, मैं उस खोफ़नाक सफ़र पर दुबारा नहीं जाणा चाहती, अब मैं उस वक़्त जाऊंगी। जब मेरे सफ़र पर दो तरफ़ा सुनहिरे गेहूं के खलिआण लहिर आएंगे और सरसों के फूल झूम झूम कर पंजाब के रसीले उलफ़त भरे गीत

गाएंगे और किसान हिंदू और मुसलमान दोनों मिल कर के खेत काटेंगे। बीज बोएंगे। हरे हरे खेतों में गुलाई करेंगे और उन के दिलों में मिहरो वफ़ा और आंखों में शरम और रूहों में औरत के लिए पिआर और मुहबत और इज़त का जज़बा होगा। मैं लकड़ी की इक बे जान गाड़ी हूं लेकिन फिर भी मैं चाहती हूं कि इस खून और गोशत और नफ़रत के बोझ से मुझे ना लादा जाए। मैं कहित ज़दा इलाकों में अनाज ढोऊंगी। मैं कोइला और तेल और लोहा ले कर कारखानों में जाऊंगी मैं किसानों के लिए नए हल और नई खाद मुहईआ करूंगी। मैं आपणे डबों में किसानों और मज़दूरों को खुशहाल टोलीआं लै कर जाऊंगी, और बाअसमत औरतों की मिठी निगाहें आपणे मरदों का दिल टटोल रही होंगी। और उन के आंचलों में नन्हें मुने खूबसूरत बच्चों के चिहरे कंवल के फूलों की तर्ही नज़र आएंगे और वोह इस मौत को नहीं बलकि आने वाली ज़िंदगी को झुक कर सलाम करेंगे। जब ना कोई हिंदू होगा ना मुसलमान बलकि सभ मज़दूर होणगे और इनसान होणगे



[शीर्ष पर जाएँ](#)